प्रेषक,

दिनांक 30.3.89

शंकर घुण्डीराज कात्रे
द्वारा श्री ए. नागराज शर्मा
श्री भजनाश्रम, अमरकंटक,
जिला-शहडोल,

आदरणीय, श्रीमती विमला शर्मा,
परमात्मा स्मरण,

आदरणीय बाई साहब, आपका आशिष पत्र दिनांक 12.01.89, मेरे सुपुत्र चि. नीलकण्ठ एवं आयुष्मान सुषमा के परिणय अवसर पर प्राप्त हुआ। मेरा सम्पूर्ण परिवार आपके इस अनुकम्पा से अनुग्रहित हुआ। मैं व्यक्तिगत रूप से अपने उस पुनीत कार्यकाल को स्मरण किया, जब आप अध्यक्ष समाज कल्याण बोर्ड, भोपाल हुआ करती थी और गर्व को महसूस किया।

मैं शासकीय सेवा से सन् 1988 माह नवम्बर में निवृत हुआ हूँ। सेवा निवृत के पश्चात् मनुष्य जीवन को पूर्णतया समझने के लिए अमरकंटक स्थित श्री भजनाश्रम, दिव्य पथ संस्थान से सम्बद्ध होकर उनके द्वारा मध्यस्थ दर्शन के प्रचार-प्रसार के कार्य में यथा सम्भव सेवा अर्पित कर रहा हूँ।

आप अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में अमरकंटक प्रवास के दौरान नर्मदा मंदिर के पीछे स्थित श्री-भजनाश्रम में पधारी थीं तथा मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता श्री ए. नागराज शर्मा को आपका परिचय प्राप्त हुआ था। मुझे विश्वास है कि आपको स्मरण होगा।

मैं आपके समक्ष विश्वास पूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि मध्यस्थ दर्शन में शोध पूर्वक जिन उपलब्धियों का समावेश है उसके अनुसार महात्मा गांधी के समय से आशित वर्गविहीन एवं धर्म-निर्पेक्ष समाज मानस व रचना एवं व्यवस्था की सम्पूर्ण सम्भावना है, जिसकी सफलता डाक्टर साहब सहित अनेक विभूतियाँ चाहते हैं।

आश्रम के तत्वाधान में आई.आई.टी. दिल्ली के कुछ आचार्य मध्यस्थ दर्शन पर आधारित "जीवन विद्या" को अध्ययन किये हैं, फलस्वरूप शिक्षा के मानवीयकरण करने की अनिवार्यता को अनुभव किये हैं।

इस महती कार्यको सफल बनाने के लिए हम कुछ लोग पुज्य ए. नागराज शर्मा के नेतृत्व में डाक्टर साहब से मिलकर उनके समक्ष शिक्षा, व्यवस्था तथा संविधान में मध्यस्थ दर्शन की सार्थकता उपयोगिता व बहु आयामी सामर्थ्य को स्पष्टकरना चाहते हैं, साथ ही डाक्टर साहब इस कार्य के अगुवा हों और उनको ऐतिहासिक यश मिले, भी चाहते हैं।

अस्तु मेरा कर बद्ध निवेदन है कि चैत्र नवरात्रि 16.03.89 (4) के पश्चात् डाक्टर साहब अपने व्यस्त समय से कुछ समय हमें दें तथा उसकी सूचना उपर लिखे पते पर देकर कृपा करें। इस पत्र के साथ मध्यस्थ दर्शन के आधार पर आधारित राष्ट्रीयता का प्रारूप डाक्टर साहब के अवगाहन के लिए भेज रहे हैं।

आदरणीय डाक्टर साहब तथा आपके संतुलित स्वास्थ्य एवं पूर्ण प्रसन्नता की कामना करते हुए

आपका कृपा कांक्षी
शं. धुं. कात्रे
30-3-89

संलग्न : 1. राष्ट्रीयता का प्रारूप,
2. महामहीम उपराष्ट्रपति को सम्बोधित विनय पत्र,

आपका कृपा कांक्षी

(शंकर धुण्डीराज कात्रे)